श्री नालंदा के सत्रह महापंडितों की प्रार्थना

लोकहित की करुणा से उत्पन्न
श्रेष्ठ ज्ञान,विबोध एवं त्राण को संप्राप्त!
प्रतीत्यजवार्ता से लोकोद्धर्ता, देवदेव
मुनीन्द्र वादिसूर्य तुम्हें शिर से प्रणाम है।।1।।

जिनजननीभावार्थ अन्तरहित तत्वार्थ का
प्रतीत्य-उत्पाद की गम्भीर–युक्ति से देशनापटु
जिनके व्याकरणवत् यानोत्तम मध्यमक-
नय के प्रणेता,नागार्जुन को नमन है ।। 2।।

उनके शिष्य ज्ञातृश्रेष्ठ सिद्धवर
स्व–पर-सिद्धांत–सिन्धु–पारंगत
नागार्जुन–परम्परा-धारकों के शिरोरत्न,
श्री आर्यदेव जिनपुत्र को प्रणाम है।।3।।

'प्रतीत्यसमुत्पाद आर्य–सम्मत है चरम-अर्थ,
प्रज्ञप्त नाममात्र' इस गम्भीर मर्म के देष्टा
उत्कृष्ट सिद्धियों की भूमियों को सम्प्राप्त
बुद्धपालित चरणों को करता प्रणाम हूँ।।4।।

सत्यवस्तुओं के उत्पाद–आदि अन्तों का खण्डन कर
सामान्य भासित बाह्य–अर्थ को प्रमाण मानने के
सिद्धांत–प्रतिष्ठापक पण्डितवर
आचार्य़ भव्य को करता प्रणाम हूँ।।5।।

इसी प्रत्ययता-मात्र से ही प्रतीत्यज के
अन्तद्वय–वारक, आभास–शून्य, मध्यमक–
गम्भीरोदारनय के उपदेशदक्ष, सून्त्रतन्त्रपरिपूर्ण
मार्ग के व्याख्याता, नमन चन्द्रकीर्ति को।।6।।

आश्चर्य अद्भुत महाकरुणापथ को
विविध गभीरोदार युक्तियों के नय से
सुभग विनेयों के उपदेशों में प्रवीण
जिनपुत्र शांतिदेव को यह प्रणाम है।।7।।

विनेयों के आश्यसम द्वैतशून्य मध्यमक–मार्ग की परम्परा के
मध्यमक और प्रमाण–युक्ति-नय में विवेकदक्ष,
हिमवत्प्रदेशों में जिनशासन–विस्तारक
शान्तरक्षित महोपाध्याय को प्रणाम है।।8।।

अन्तरहित मध्यमक दर्शन,युगनद्धशमथ–विपश्यना के
भावनाक्रम का सूत्रतंत्र-सम्मत ही सम्यक् विस्तार कर
हिमवत्प्रदेशों में जिनशासन–विस्तारक
निर्भ्रांत कमलशील–पाद को प्रणाम है।।9।।

मैत्रेय-कृपापात्र,सर्वमहायानी पिटकों के सुविस्तारदक्ष,
अतिविस्तीर्ण मार्ग का उपदेश देते हुए
जिन व्याकरणानुसार विज्ञान–रथ-संचालक
असंग के चरणों में करता प्रणाम हूँ।।10।।

द्वयशून्यता और सात अभिम्धान–ग्रंथों की परम्परा धारण कर,
वैभाषिक–सौत्रान्तिक–विज्ञप्ति सिद्धांतों के प्रकाशक,
द्वितीय सर्वज्ञवत् विख्यात,विद्धवर,
आचार्य वसुबन्धुचरणों को प्रणाम है।।11।।

मुनि के शास्त्रों की परम्परा और फिर
वस्तुबल–युक्ति से देशनार्थ,
तर्क द्वार शतशः उद्घाटित कर
विवेक–मति-दृष्टिदाता, नैयायिक
दिङ्गनाग–पादों को करता प्रणाम हूँ।।12।।

बाह्य-आभ्यतंर प्रमाणों के सर्व मर्मज्ञ,
सौत्र–चैत्त गम्भीरोदार सर्व मार्ग के
युक्ति द्वारा निर्णायक अद्भुत धर्मनीति के
पटुवक्ता धर्मकीर्तिपाद को नमन है।।13।।

असंग–बन्धुओं से आगत प्रज्ञापारमिता-अर्थ
सदसदन्तहीन मधयमक प्रसंगवत्
अलंकारशास्त्रार्थालोकदीप-प्रज्वालक
विमुक्तिसेन आर्य़ के चरणों में नमन है।।14।।

जननी के अर्थ के विभंग हेतु जिन के व्याकरण- प्राप्त,
अजितनाथ के भी अववादों के यथावत्
प्रकाशक त्रिमातृ –प्रज्ञापारमिवर ग्रन्थों के
आचार्य हरिभद्र को यह नमन है ।। 15।।

लाखों ही विनय-निकायों के भावों का संक्षेप कर
सर्वास्तिवाद–शास्त्र–सम्मत प्रातिमोक्ष के
सम्यक् देशना-प्रवीण
गुणप्रभापद को करता प्रणाम हूँ।।16।।

त्रिशिक्षा-गुण–मणि-कोश के अधिकारी,
विमल विनयशासन के दीर्घ स्थायित्व हेतु
विपुल ग्रंथार्थ के विस्तारक,विनयधरों में श्रेष्ठ
शाक्यप्रभ–चरणों में करता प्रणाम हूँ।।17।।

मुनिप्रोक्त गम्भीर औ उदार वचन–परम्परा अशेष का
पुरुषत्रयमार्गतया उपदेशों के कर्ता,
हिमवत्प्रदेश में मुनिशासन–विस्तारक,
महाकृपालु भट्टारक नमन अतीश को।।18।।

जम्बूद्वीप–अलंकारभूत ऐसे ऐसे
अद्भुत सुभाषितों के आकर श्रेष्ठविज्ञों की
दृढ़ प्रसन्नचित्त से की गई अध्येषणक से
मेरी संतति पक्व होकर मुक्ति में अधिष्ठित हो।।19।।

वस्तु की अवस्थिति और सत्यद्वय–अर्थ जान,
सत्य–चतुष्टय से भव प्रवृत्ति और निवृत्ति के यथावत् विनिश्चय से
तर्कपुष्ट श्रद्धा को त्रिशरण में दृढ़ करके
मोक्षमार्गमूल में दृढ़ अधिष्ठान हो।।20।।

दुःख-समुदयेपशम निर्वाण–काम बनूँ ,
निर्याण–बुद्धि और जगत की त्राणेच्छा
दिगन्तव्यापिनी करुणा से उद्गत हों,
अकृत्रिम बोधिचित्ताभ्यास में अधिष्ठित हो जाऊँ।।21।।

महारथियों के ग्रंथों के अर्थों में
श्रतु–चिन्ता–भावना से हो करके पारंगत
वज्रयान के सभी गंभीर-मर्म–मार्ग के निश्चय की
सहज शीघ्र प्राप्ति में अधिष्ठित हो जाऊँ।।22।।

जन्म- जन्मान्तर में त्रिशिक्षामय सदाशय पा
भाषण और साधना से आगम और अधिगममय
शासन को धारण कर,उसकी विवृद्धि-हेतु
महारथियों के सदृश शासन- कार्य कर सकूँ।।23।।

सभी संघों में श्रवण–चिन्तन-व्याख्यान–साधना-क्रिया में सदा रत
असम्यक् आजीविका के परित्यागी
श्रेष्ठ विद्वानों और सिद्धों की प्रवृद्धि से
जम्बूद्वीप महाभूमि सर्वदा अलङ्कृत हो।।24।।

उनके अनुभाव से,समस्त सूत्र–तन्त्र–भूमिमार्ग में,
प्रवृत्त हो,अनाभोग दोनों ही अर्थों को साधकर,
शीघ्र ही सर्वज्ञ जिन का पद प्राप्त कर
आकाश–स्थिति-पर्यन्त लोकहित कर सकूँ।।25।।

इति शाक्य- भिक्षु तेंज़िन ग्याछो के द्वारा स्थविरवादी परम्परा अनुसार शास्ता के परिनिर्वाण के वर्ष 2545, तिब्बती कालानुसार सत्रहवें प्रभव के लौहसर्प वर्ष के 11 वें मास के प्रथम दिन,ख्रीष्टाब्द 2001 मास 12 एवं दिनांक 15 को भारत के हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा जनपद,धर्मशाला स्थित थेगछेन छोलिङ् में सम्पन्न किया गया ।